Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 9 ~ Issue 1 (2021) pp: 92-97
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

राजनीतिक समाजीकरण
(POLITICAL SOCIALISATION)

डॉ0 राधिका देवी
विभागाध्यक्ष(राजनीति विज्ञान)
ए0के0पी0(पी0जी0) कॉलिज, खुर्जा
जिला–बुलन्दषहर (उ0प्र0)

राजनीतिक समाजीकरण वह प्रकिया है जिसके द्वारा राजनीतिक संस्कृतियों को अनुरक्षण और उसमें परिवर्तन किया जाता है। समाजीकरण के माध्यम से व्यक्तियों को राजनीतिक संस्कृतियों में शामिल किया जाता है। तभी राजनीतिक वस्तुओं के प्रति उनके अभिविन्यास का निर्माण किया जाता है। दूसरे शब्दों में, समाजीकरण उस शिक्षण प्रक्रिया की ओर निर्देश करता है, जिसके द्वारा सुसंचालित राजनीतिक व्यवस्था के लिए स्वीकार्य मानकों और व्यवहारों को एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक सम्प्रेषित किया जाता है। राजनीतिक समाजीकरण का उद्देश्य व्यक्तियों का इस तरीके से प्रशिक्षण और विकास करना है कि वे राजनीतिक समुदाय के सुकार्यकारी सदस्य बन सकें।

राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया सामान्यतया आकस्मिक अथवा अदृश्य रूप से कार्य करती है। इसका अर्थ यह है कि यह इतने शान्त और सौम्य रूप से संचालित होती हैं कि कई बार लोगों को इसके संचालन की खबर भी नहीं होती है।

राजनीतिक समाजीकरण की संकल्पनाओं में प्रधान बल एक पीढ़ी तक राजनीतिक मूल्यों के सम्प्रेषण पर दिया जाता है। किसी सामाजिक अथवा राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता इस तथ्य के कारण इसके सदस्यों के राजनीतिक समाजीकरण पर निर्भर करती है कि एक अच्छा कार्यकारी नागरिक मानकों को अंगीकार का ले और उन्हें भावी पीढ़ियों को सम्प्रेषित करें। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में नागरिकों को प्रशिक्षित कर इस बात का अभ्यस्त बनाया जाता है कि वे परिवर्तन करने के लिए संवैधानिक उपायों को स्वीकार कर लें, बजाय इसके कि इन मामलों को सड़कों पर ले जायें या हिंसात्मक उथल–पुथल की अवस्थाएं पैदा करें।

सरल शब्दों में कहा जाय तो राजनीतिक समाजीकरण एक ऐसा विचार है जो राजनीतिक स्थायित्व (Political stabilization) के लक्ष्य को प्राप्त करने की अपेक्षा करता है। **राबर्टा सीगल** के शब्दों में ''राजनीतिक समाजीकरण का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का प्रशिक्षण और विकास करना है जिससे वे राजनीतिक समाज के अच्छे कार्यकारी सदस्य बन सकें। राजनीतिक समाजीकरण व्यक्तियों के मन में मूल्यों, मानकों और अभिविन्यासों का विकास करता है जिसमें राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विश्वास की भावना हो और वे अपने आपको अच्छे कार्यकारी नागरिक के रूप में बनाये रखें तथा अपने उत्तराधिकारियों के मन पर अमिट छाप छोड़ सकें।[1]

आमण्ड एवं पॉबिल राजनीतिक समाजीकरण को एक ऐसी प्रक्रिया मानते हैं जिसके द्वारा व्यक्ति राजनीतिक संस्कृति में प्रवेश करता है। राजनीतिक वस्तुओं के प्रति ज्ञान प्राप्त करता है, अपने प्रतिमानों, अभिकांक्षाओं का निर्माण करता हैं, अपने व्यवहार की रीति निर्धारित करता है अर्थात् वह राजनीतिक संस्कृति एवं पद्धति का अंग बनता है, उनका

मत है कि यह अवधारणा आधुनिक युग में इसलिए विशेष महत्व रखते हैं कि इसके माध्यम से राजनीतिक स्थायित्वता एवं विकास को सरलता से समझा जा सकता है। आधुनिक युग में नये राज्यों के उदय के कारणवश, संचार साधनों में निरन्तर विकास के कारणवश, तकनीकी खोजें के परिणामस्वरूप समाजीकरण की प्रक्रिया आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में विशेष स्थान रखती है।[2]

राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया बन जाती है क्योंकि यह नागरिकों के दृष्टिकोण से सम्बन्ध रखती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य को आने वाली राजनीतिक पद्धति के मान्य प्रतिमान एवं व्यवहार के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त होता है। यह स्वाभाविक है कि यह ज्ञान आहिस्ता–आहिस्ता बिना चेष्टा किये होता रहता है पर ज्ञान प्रयत्नों द्वारा भी प्राप्त किया जाता है आमण्ड एवं पॉवेल इस प्रक्रिया को दो भागों में बांटते हैं : स्पष्ट एवं अस्पष्ट (Manifest and Latent) इनका मत है कि नागरिक राजनीतिक वस्तुओं के प्रति ज्ञान केवल राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेते समय ही प्राप्त नहीं करते बल्कि उस काल में भी वह ज्ञान प्राप्त करते हैं जबकि वह राजनीतिक प्रक्रिया में भाग नहीं ले रहे होते। प्रायः नागरिकों की राजनीतिक संस्कृति के अधिकांश भाग का निर्माण अप्रत्यक्ष रूप में ही होता है पर मनुष्य पर प्रत्यक्ष प्रभाव भी पड़ते हैं जो सम्भवतः उतना ही महत्व रखते हैं जितना कि अप्रत्यक्ष। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि राजनीति समाजीकरण एक ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से नागरिक राजनीतिक पद्धति के उद्देश्यों, मानकों और उसके व्यवहार के सम्बन्ध में प्राप्त करता है। इसी के माध्यम से वह अपने उद्देश्यों, मांगों, अभिलाषाओं का निर्माण करता है, अपने व्यवहार की नीति बनाता है अर्थात् राजनीतिक संस्कृति में प्रवेश करता है, राजनीतिक पद्धति में अपना स्थान खोजता है और अपना योगदान देता है।

राजनीतिक समाजीकरण का उद्देश्य नागरिकों को ज्ञान देकर समाज के अच्छे कार्यवाहक बनाना है।[3] क्योंकि राजनीतिक पद्धति में एकता के अभाव में राजनीतिक प्रक्रिया असम्भव हो जाती है जिससे पद्धति के स्थायित्व को खतरा उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार राजनीतिक समाजीकरण उन मूल्यों, प्रतिमानों और दृष्टिकोणों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त कराता है ताकि व्यक्ति अच्छे नागरिकों के रूप में आने वाली पीढ़ियों पर अच्छा प्रभाव डाल सकें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब बच्चा उत्पन्न होता है तो वह ज्ञान प्राप्त व्यक्ति नहीं होता। वह राजनीतिक ज्ञान आहिस्ता–आहिस्ता प्राप्त करता है। राजनीतिक समाजीकरण के लिए केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है उसके लिए यह भी आवश्यक है कि समाज के जिन मूल्यों एवं प्रतिमानों के सम्बन्ध में उसे ज्ञान प्राप्त हुआ है वह उन्हें अपने मूल्य एवं प्रतिमान बना लें तभी वह अच्छा नागरिक बन सकेगा।[4]

राजनीतिक समाजीकरण उस समय आरम्भ होता है जब एक बच्चा पर्यावरण में प्रवेश करता है। वह अनेक प्रकार की परिस्थितियों के सम्पर्क में आता है जिनके माध्यम से वह ज्ञान प्राप्त करता है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें बच्चा सत्ता, आज्ञा, विरोध, सहभागिता के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है। ईस्टन एवं डेनिंग बच्चे के जीवन में चार सत्रों का वर्णन करते हैं जिसके द्वारा बच्चा राजनीतिक समाजीकरण एवं राजनीतिक संस्कृति में प्रवेश करता है :

- विशेष व्यक्तियों के माध्यम से सत्ता की मान्यता।
- सार्वजनिक एवं निजी सत्ता में अन्तर।
- राजनीतिक संस्थाओं एवं व्यवहार के सम्बन्ध में ज्ञान।
- राजनीतिक संस्थाओं और व्यक्ति विशेष के मध्य अन्तर।

*Corresponding Author: Michael Otieno Otieno

मिलचर रस ऐसी ही स्थिति में वातावरण और प्रयोगात्मक प्रभाव का भी वर्णन करते हैं जो बच्चे के समाजीकरण को प्रभावित करते हैं। उनका मानना है कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि समाजीकरण की प्रक्रिया मनुष्य के आरम्भ में जीवन से ही शुरू हो जाती है, पर यह ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य के सारे जीवन तक चलती रहती है। प्रायः यह देखा गया है कि जो प्रभाव मनुष्य पर राजनीतिक जीवन आरम्भ करने से पूर्व पड़ते हैं वे अधिक महत्व रखते हैं। व्यक्ति जिन प्रभावों को प्रयोग के आधार पर ग्रहण करता है उनकी तुलना वह आरम्भ में प्राप्त मूल्यों एवं दृष्टिकोणों से करता है और उसी आधार पर अपने मूल्यों एवं व्यवहार को संशोधित करता है। यही कारण है कि आमण्ड एवं वर्षा इन अनुभवी प्रभावों को समाजीकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उनका मत है कि समाजीकरण की प्रक्रिया इस प्रकार समाज की राजनीतिक पद्धति में न केवल स्थायित्व लाती है बल्कि आवश्यकता पड़ने पर परिवर्तन को भी सरल बना देती है।[5]

राजनीतिक समाजीकरण का संप्रत्ययीकरण एवं प्रक्रिया
(CONCEPTUALISATION OF THE CONCEPT OF POLITICAL SOCIALISATION)

राजनीतिक समाजीकरण से सम्बद्ध अनुसन्धान को संगठित एवं व्यवस्थित करने के यद्यपि अनेक संप्रत्यात्मक आधार प्रस्तुत किये गये हैं, परन्तु फिर भी आज तक कोई सर्वमान्य प्रारूप विकसित नहीं हो पाया है।

समाजीकरण की प्रक्रिया का 'सैद्धान्तिक अवधारणा' के रूप में विश्लेषण सर्वप्रथम मनोविज्ञान में एवं तत्पश्चात् समाजशास्त्र में किया गया। राजनीतिक अध्ययन में इसका समावेश बाद की घटना है। मनोविज्ञान में समाजीकरण को शैशवकाल की अर्जनात्मक एवं विकासात्मक प्रवृतियों के सन्दर्भ में विश्लेषित किया गया। फ्रॉयल से लेकर कैरन हॉर्नी, हैरी स्टैक सुलीवान एवं एरिक फ्रॉम के विश्लेषण इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय हैं। समाजशास्त्र में, समाजीकरण को मानसिक प्रक्रिया एवं व्यक्तिगत प्रक्रिया के बजाय एक सामाजिक प्रक्रिया माना गया, जिसे सिर्फ शैशवकाल तक सीमित नहीं समझा गया, अपितु एक जीवन पर्यन्त प्रक्रिया के रूप में विश्लेषित किया गया। जार्ज हरबर्ट मीट से लेकर रॉबर्ट मर्टन, टॉलकट पार्सन्स एवं हौरोविज के विश्लेषण इस सन्दर्भ में स्मरणीय हैं। व्यवहारवादी पार्सन्स एवं मार्टन ने राजनीतिक विश्लेषण को भी महत्वपूर्ण अंश में प्रभावित किया। पार्सन्स ने समाजीकरण को मूल रूप से एक अर्जन की अभिवृत्ति माना, जो सामाजिक–भूमिका वहन के लिए सांदर्भिक शर्त है। मर्टन ने, समाजीकरण को पूर्ण रूप से मात्र सकारात्मक प्रक्रिया नहीं माना, अपितु, 'प्रवेक्षित समाजीकरण'(Anticipatory Socilization) एवं 'अ–समाजीकरण'(A-Socialization) की धाराणाएं विकसित कर, एक नये प्रकार का आयाम जोड़ा।[6]

राजनीतिशास्त्र में, समाजीकरण की अवधारणा में प्रथम व्यवस्थित विश्लेषण का श्रेय हर्बर्ट हाइमैन को है जिन्होंने उन सभी सामाजिक प्रतिमानों का अर्जन, राजनीतिक समाजकरण माना, जो विभिन्न सामाजिक अभिकरणों की सहायता से, व्यक्ति के लिए सम्भव हैं। हाईमैन ने राजनीतिक समाजीकरण को एक स्वायत्त प्रक्रिया न मानकर, उसे वृहत् समाजीकरण की एक उप–प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत कियां ग्रेब्रियल आमण्ड ने राजनीतिक समाजीकरण को राजनीतिक संस्कृति (Political Culture) के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक मूल्य व्यवस्थाओं के प्रेरक (induction) का अपरिहार्य संयन्त्र माना। डेविस ईस्टन ने आर.डी. हैस के साथ, एक अध्ययन में, राजनीतिक समाजीकरण को तीन आधारभूत अभिवृत्तियों–ज्ञान, मूल्य, व्यवस्था एवं मनोवृत्ति– से प्रेरित प्रक्रिया के रूप में समझा। फ्रीमैन के अनुसार राजनीतिक समाजीकरण, सामान्य समाजीकरण प्रक्रिया का एक निश्चित भाग है, जो राजनीतिक दृष्टि से सांदर्भिक (Politically culture) सामाजिक प्रतिमानों के अर्जन से सम्बन्धित है। लीवलाइन ने राजनीतिक समाजीकरण को राजनीतिक व्यवस्था के सन्दर्भ में सांस्कृतिक परिवर्तन से सम्बद्ध प्रक्रिया के रूप में विश्लेषित किया।[7]

सामान्य व्यवस्था सिद्धान्त के समर्थकों (ईस्टन, हेस) ने राजनीतिक समाजीकरण को व्यवस्था के लिए समर्थन प्राप्त करने एवं उसे बनाये रखने का एक माध्यम बताया है। इस दृष्टिकोण में राजनीतिक समाजीकरण के अध्ययन से अभिप्राय राजनीतिक व्यवस्था के प्रत्येक स्तर पर समर्थन सम्बन्धी एवं विघटनकारी प्रभावों की व्याख्या करना है। संरचनात्मक– प्रकार्यात्मक उपागम के समर्थक विद्वान (पारसन्स, विचेल, आमण्ड तथा वर्बा, आदि) राजनीतिक समाजीकरण को व्यवस्थावादी विचारक के समान ही देखने का प्रयास करते हैं, परन्तु समाजीकरण के महत्व की दृष्टि से इनका दृष्टिकोण थोड़ा–सा भिन्न है। ये विचारक राजनीतिक समाजीकरण को व्यवस्था के अस्तित्व को बनाये रखने में महत्वपूर्ण मानने के साथ–साथ इस पर भी बल देते हैं कि यह केवल राजनीतिक व्यवस्था के निवेशन (अर्थात् समर्थन, साधनों व मांगों) को ही प्रभावित नहीं करता, अपितु इन निवेशनों को निर्णयात्मक निर्गतों में परिवर्तित करने में भी महत्वपूर्ण है।[8]

राजनीतिक समाजीकरण की विषेषताएं

(SALIENT FEATURES OF POLITICAL SOCIALISATION)

ऊपर दिये गये विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजनीतिक समाजीकरण वास्तव में एक प्रकार की शिक्षा है जिसके माध्यम से व्यक्ति राजनीतिक वस्तुओं के प्रति ज्ञान प्राप्त करता है और अपने व्यवहार का निर्माण करता है। मैनहीन ने राजनीतिक समाजीकरण की चार विशेषताओं का वर्णन किया है जो इस प्रकार हैं :

- राजनीतिक समाजीकरण आधारभूत रूप में एक अधिक विस्तृत या सामान्य सीखने व शिक्षण की प्रक्रिया का एक ही भाग है। इस प्रकार यह उस प्रक्रिया से केवल उन्हीं तत्वों को ग्रहण करता है जिनकी राजनीतिक वस्तुओं, मूल्यों या गतिविधियों से संगतता व उपयोगिता हो।

- राजनीतिक समाजीकरण के फल योगात्मक और अन्तर्क्रियात्मक (Aggregative and interactive) हैं। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया सदा ही जारी रहती है।

- राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया अति विस्तारपूर्ण (Comprehensive) है, इसमें वे सभी बातें आ जाती हैं जिनमें राजनीति को सीखने से कुछ भी अथवा दूरी का भी सम्बन्ध हो।

- प्रत्येक व्यक्ति समाजीकरण के अनुभवों के न्यूनाधिक अनोखे मेल का प्रतिनिधित्व करता है। चूंकि पारिवारिक जीवन, सामूहिक संघों, शैक्षिक अनुभवों और जीवन शैलियों के प्रकार अनगिनत हैं और चूंकि राजनीतिक समाजीकरण में अन्य शक्तियां अन्तर्गत रहती हैं, अतः ऐसे समाजीकरण के सम्भावित उत्पाद भी अनगिनत और विविध प्रकार के हैं। (The potential products of such socialization must be more numerous and more diverse)[9]

राजनीतिक समाजीकरण केअभिकरण

(INSTRUMENTS OR AGENTS OF POLITICAL SOCIALISATION)

आमण्ड एवं पॉवेल राजनीतिक शिक्षा को एक जीवनकाल की शिक्षा और एलेन बॉल इसको एक ऐसी शिक्षा मानते हैं जो केवल मनुष्य के बचपन तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि सारे जीवन तक चलती रहती है।[10] वह कुटुम्ब, शिक्षा संस्थाओं, जन संचार साधनों, व्यवसायी संस्थाओं को समाजीकरण के अभिकर्ताओं के (Agents) के रूप में देखते हैं जिनमें मनुष्य व्यावहारिक एवं औपचारिक राजनीतिक शिक्षा ग्रहण करता है।

समाजीकरण के प्रमुख अभिकरण (Agents) अग्र प्रकार हैं :

- परिवार का कुटुम्ब,
- औपचारिक शिक्षा संस्थाएं,
- अनौपचारिक संस्थाएं,
- जनसंचार के साधन,
- राजनीतिक दल।

यह स्वाभाविक ही है कि समाजीकरण की संस्थाओं में सर्वप्रथम स्थान परिवार एवं कुटुम्ब को ही प्राप्त हो सकता है। यहीं से व्यक्ति सन्तोष एवं विरोध की भावनाएं ग्रहण करता है। आदेश एवं आज्ञा के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है। श्रद्धा की भावना ग्रहण करता है, राजनीतिक मूल्यों का निर्माण करता है। रॉबर्ट लेन कुटुम्ब में तीन रीतियाँ का वर्णन करते हैं जिनके द्वारा एक बच्चा ज्ञान प्राप्त करता है :

- प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सिद्वान्तीकरण,
- बच्चे का एक विशेष सामाजिक परिस्थिति से सम्पर्क,
- बच्चे की मनोवृत्ति का उद्देश्यपूर्ण निर्माण।[11]

व्यक्ति की राजनीतिक शिक्षा में दूसरे स्थान पर औपचारिक शिक्षा संस्थाएं हैं। अतीत से यह विश्वास किया जाता है कि शिक्षा संस्थाएं व्यक्ति के राजनीतिक व्यवहार के निर्माण में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। आमण्ड एवं वर्बा यह विश्वास करते हैं कि जितनी अधिक एक व्यक्ति की शिक्षा होगी उतना ही अधिक उसे राजनीतिक ज्ञान होगा और राजनीतिक एवं सरकारी प्रक्रिया को समझ पायेगा तथा राजनीतिक वस्तुओं के सम्बन्ध में उसके उतने ही अधिक विचार होगें। राजनीति में वह सक्रिय होगा, राजनीतिक क्रियाओं को प्रभावित करने की क्षमता होगी और सामाजिक वातावरण में विश्वास होगा। यही कारण है कि स्कूलों के पाठयक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। उच्च–शिक्षा की संस्थाएं व्यक्ति को राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में परोक्ष अनुभव प्रदान करके विशेष सहायता करती हैं जिसके माध्यम से राजनीतिक पद्धति में वह सरलता से अपना स्थान ग्रहण कर लेता है। यह शिक्षा संस्थाएं राजनीतिक पद्धति में स्थापित व्यवहारों को स्पष्ट कर देती हैं। मायरन विनर भारत में विश्वविद्यालयों की समाजीकरण की क्रिया में भूमिका का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि 'अगर विश्वविद्यालयों के अधिकारी विद्यार्थियों की शिकायतों को दूर करने का सन्तोषजनक मार्ग निकाल लें तो विश्वविद्यालयों में अनुशासनहीनता की समस्या तो दूर हो ही जायेगी, वह देश को ऐसे अभिजन भी देगें जो पद्धति के स्थायित्व को प्रभावित करेंगे और देश को उन्नति की ओर ले जायेगें।[12]

इस राजनीतिक शिक्षा में तीसरा स्थान औपचारिक संस्थाओं का है जहां व्यक्ति कार्य करता है, मनोरंजन के लिए जाता है या सामूहिक रूप से राजनीतिक क्रियाओं में भाग लेता है और चौथा स्थान जन–संचार साधनों का है जिनके माध्यम से वह अपने राजनीतिक विचार बनाता है, सूचनाएं ग्रहण करता है और राजनीति में गतिशील होने का प्रयत्न करता है।

राजनीतिक दल भी समाजीकरण के अभिकरण हैं। सर्व सत्तावादी राज व्यवस्थाओं के राजनीतिक दलों का प्रमुख कार्य पुरातन मूल्यों एवं मान्यताओं को स्थापित करना होता है। जनतन्त्रात्मक देशों व राज्य व्यवस्थाओं में यद्यपि राजनीतिक दलों का प्रधान कार्य मतदाताओं को मतदान के प्रति प्रशिक्षित करना है, फिर भी इनमें नये मूल्यों को प्रस्थापित करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। नवोदित राष्ट्रों में राज–संस्कृति के सर्जन एवं परिवर्तन में राजनीतिक दलों को बहुत अधिक महत्व है। इन देशों में अन्य संस्थाओं के अविकसित स्वरूप के कारण राजनीतिक दल केवल निर्वाचकीय उपादान ही बनकर नहीं रह जाते हैं बल्कि वे ढ़ेर सारे दूसरे कार्यों का सम्पादन या निष्पादन करते हैं, जैसे जनता एवं शासन के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना, राजनीतिक सूचनाओं का प्रसार करना, विभिन्न समुदायों में एकता स्थापित करना तथा राष्ट्रीय कार्यक्रमों का प्रसार कर राजनीतिक समाजीकरण के एजेण्ट के रूप में सकारात्मक भूमिका निभाना।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो सदैव राजनीतिक शिक्षा ग्रहण करता रहता है। वह अपने मानकों के उद्देश्यों का निर्माण करता है और अनुभव के आधार पर उन्हें संशोधित करता रहता है।

संदर्भ सूची :–

1– डॉ0 बी0एल0फड़िया एण्ड पुखराज जैन, मॉर्डन पॉलिटिकल थ्यौरी, पृ0 174।

2- S.P. Verma, Modern Political Theory, New Delhi, Vikas, 1975 p. 299.

3- Seigal Roberta, Assumptions about the Learning of Political Values, Annals od A.A.P.S. and S.Philadelphia, Vol. 361, September 1985, p.1.

4- Seigal Roberta, Assumptions about the Learning of Political Values, Annals od A.A.P.S. and S.Philadelphia, Vol. 361, September 1985, p.2.

5- Almond and Powell, op. cit., pp. 65-69.
Also see Nettel, J.P., Strategies in the Study of Political Development (ed.) by Colin Lays, Politics and Change in the Developing Countries, London, Cambrige University, 1969, pp. 16-21.

6- डॉ0 बी0एल0फड़िया एण्ड पुखराज जैन, मॉर्डन पॉलिटिकल थ्यौरी, पृ0 176।

7- डॉ0 बी0एल0फड़िया एण्ड पुखराज जैन, मॉर्डन पॉलिटिकल थ्यौरी, पृ0 176।

8- डॉ0 बी0एल0फड़िया एण्ड पुखराज जैन, मॉर्डन पॉलिटिकल थ्यौरी, पृ0 176।

9- डॉ0 बी0एल0फड़िया एण्ड पुखराज जैन, मॉर्डन पॉलिटिकल थ्यौरी, पृ0 177।

10- A.R. Ball, Modern Politics and Government, London, Macmillan, 1971, p. 73.

11- R. E. Lane, Fathers and Sons : Foundations of Political Baliefs, A.S.R. Vol. XXIV, pp. 502-11.

12- Myron Weiner's analysis is important and therefore I am reproducing a part of it as under.
"We have tried to suggest that indiscipline within the Universities and Colleges…..The result may be-------and thus far has been not only to widen the breach between students and authorities, but more seriously to widen the gap between the politics and policy in student's minds…..the former being thought of as a futile but exciting outlet for personal protests the latter as the eddicts and actions issuing from aloof and non-responsive Government of University, The concerate demands by organized student groups against university and non-university authorities, while often irresponsible in their initial appearance, are often potentially negotiable and manageable. If University authorities are able to develop procedures by which students may present their grievances, universities and colleges will do more than eliminate indispline. They will educate students to recognise the relationship between politics and public policy, and thereby strengthen the capacity of students to recognise the relationship between polities and public policy, and thereby strengthen the capacity of students to function as adults within a democratic society."
-Myron Weiner, The Politics Scarcity, Chicago, University of Chicago Press, 1962, p. 185.

*Corresponding Author: Michael Otieno Otieno